International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(2): 34-37

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(2): 34-37
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 10-01-2017
Accepted: 11-02-2017

Ratan Chandra Sarkar
Asst. Teacher, Chakchaka High School, Po.-Chakchaka, Di.-Coochbehar, Pin-736101, West Bengal, India

Correspondence
Ratan Chandra Sarkar
Asst. Teacher, Chakchaka High School, Po.-Chakchaka, Di.-Coochbehar, Pin-736101, West Bengal, India

हनुमान जी का जन्मवृत्तान्त एवं श्री रामचन्द्र के प्रति उनकी भक्तिभावना

Ratan Chandra Sarkar

प्रस्तावना

युग युग से मनुष्य के हृदय को प्रभावित करने वाला और भक्तिभावना का मूर्त प्रतीक हैं महाकाव्य 'रामायण'। रामायण में एक तरफ देखने को मिलते हैं आदर्श राजा तथा कर्तव्यनिष्ठ, न्यायपरायण श्री रामचन्द्र जो कि अयोध्यानरेश दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र हैं, दूसरीतरफ हनुमान जी ऐसे भक्त हैं जो भगवान श्री रामचन्द्र की तरह सद्भावना के प्रतीक, त्रेतायुग में भक्तिभावना का अद्‌वितीय निदर्शन करने वाले तथा योग्य सेवक की तरह कभी वानरसम्राट सुग्रीव से दयाभाव कभी प्रभु श्री रामचन्द्र के प्रति उनकी आदर्श भाक्तिभाव युग युग में मनुष्यजातिकों आश्चर्य चकित तथा प्रेरित करता हैं।

जन्मवृत्तान्त-

हनुमान जी की माता जो कि जन्मना अप्सरा हैं किन्तु शाप के कारण उनका पृथ्वी पर जन्म होता है और उन्होंने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम हनुमान हैं, अञ्जना शिवजी की आराधना करती हैं पुत्र प्राप्ति के लिए उसी समय दूसरी तरफ अयोध्यापति दशरथ भी पुत्रेष्टि नामक यज्ञ करते हैं पुत्र प्राप्ति हेतु। राजा यज्ञ के क्षीर तीनों रानियों को खाने के लिए देते हैं इसके उपरान्त दशरथ जी कि तीनों रानियों ने चार पुत्रों को जन्म दिया – राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न। उसी क्षीर का दूसरा भाग लेकर एक पक्षी उड़ गया और जंगल में छोड़ दिया उसी समय वायु (पवन) देव ने क्षीर को अञ्जना के हाथों में गिरा दिया और क्षीर खाकर अञ्जना गर्भवती हुई ऐसे हनुमान का जन्म हुआ। जिस कारण हनुमान को पवन पुत्र भी कहा जाता हैं।

बाल्यदशा में हनुमान क्षुधार्त होकर फल खोज रहे थे, उसी समय सूर्य को फल समझकर उन्होंने निगल लिया, तब उनका मुख तेज के कारण वानर जैसा हो गया। राहु डरकर देवराज इन्द्र से बोलने पर देवराज ने वज्र से हनुमान जी पर आघात किया और वे बेहोश हो गये।

किष्किन्धाकाण्ड षट्षष्ठितम सर्ग में जाम्बबान के मुख से सुना जाता हैं कि अञ्जना नाम की एक सर्वाङ्ग सुन्दरी तीनों लोको में प्रख्यात थी, जिसके पिता कुञ्जर है, और कपिराज केशरी को पति के रूप में देखा गया। शाप के दौरान अञ्जना वानरी बन गये।

श्रीरामचन्द्र के प्रति भाक्तिभावना

वाल्मीकि रामायण किष्किन्धाकाण्ड षड़विंश सर्ग में रामजी के हाथ बालि के अंतिम क्रियाकर्म के बाद हनुमान जी रामचन्द्र को कर जोड़कर बोलते है-तुम्हारे कारण सुग्रीव किष्किन्धा का अधिपति बने। अब आप आज्ञा दीजिए सुग्रीव को नगर में जाकर राजकर्म करने के लिए। आप भी पर्वतगह्वर में चलिये। मगर रामजी यह बात नहीं मानी। यहाँ पर एकतरफ हनुमान अपने गुरू तथा प्रभु रामजी के प्रति श्रद्धाभाव दूसरी तरफ रामचन्द्र की पितृ आज्ञा का पालन अतुलनीय है। रामचन्द्र की आज्ञा से सुग्रीव अंगद का अभिषेक करके पत्नी रूमा को ग्रहन करके राजा बन गया।

सुग्रीव राजपाठ पाकर जब पत्नी रूमा, तारा प्रमुख रमणी के साथ भोगसुख में लिप्त हैं उसी समय हनुमानजी ने सीता अन्वेषण में सुग्रीव को उदासीन देख कर विनम्रता के साथ कहा, राजन् ! आपको राज्य मिले यश मिले, कुल स्त्री भी मिले, अब आपकी प्रतिज्ञा के बारे में स्मरण हो जाना चाहिये जो आपका नैतिक कर्तव्य हैं जो आपने रामजी को दिया हैं जब प्रभु राम ने आपको आपके शत्रुसमान भ्राता बालि से बचाया। अब आपको सीता अन्वेषण में विलम्ब नही करना चाहिये। मगर राजपाठ पाकर सुग्रीव अपने कर्तव्य भूल गये। तब लक्ष्मण क्रोधित होकर उनसे मिलने गये तब सुग्रीव को अपने कृतकार्य के बारे में स्मरण कराने के बाद हनुमान बोले, राजाको सुपरामर्श देना मन्त्री की नैतिक कर्तव्य होता है, क्योकि मैं आपका मुख्य सचिव हूं इसलिए आपके हित तथा प्रभु के प्रति सदभवना मेरा करणीय हैं। तब सुग्रीव अपना कृतकर्म को स्मरण करके व्यथित हुए। प्रभु के प्रति हनुमान का यह भक्तिभाव देखकर सुग्रीव महावीर हनुमान को सम्बोधन करके बोलते हैं - हनुमान तुम सर्वत्रगति, पृथ्वी, आकाश और देवलोक कोई भी स्थान अगम्य नही हो। तुम्हारी गति अतुलनीय, तुम तेजस्वी हो।

हनुमान की तेजस्विता के लिये जानकी अन्वेषण में सुग्रीव हनुमानजी के उपर ज्यादा आस्था ज्ञापित करते हैं।

पवनदूत हनुमान रामजी के अङ्गुरीय लेकर माता सीता के पास अशोकवाटिका में जहां पर पिशाच राक्षसी परिवेष्टित हैं वहां जाते हैं। दूसरीतरफ सुग्रीव जी ने भी वानर सेना को लेकर देश, पर्वत, नदी, समुद्र में सीता को खोजते हैं तब सुग्रीव को अभिवादन करके तारा बोलती है कि सीता अन्वेषण निमित्त पवननन्दन हनुमान उपयुक्त हैं, क्योंकि वे महावीर अतुलनीय क्षमता के अधिकारी हैं।

अष्टचत्वारिंश सर्ग में बालि पुत्र अङ्गद के सहित हनुमान जी दक्षिण दिशा में विन्ध्याचल पर्वत, नदी, अरण्य गह्वर अन्वेषण करने लगे। सप्तषष्ठितम सर्ग में प्रभु राम जी के प्रति अनुप्राणितचित्त हनुमान अपनी कीर्ति तथा विक्रम से किसी भी तरह माता सीता को अन्वेषण करने के लिये प्रतिज्ञावद्ध होते हैं।

वाल्मीकि रामायण – सुन्दरकाण्ड:-

त्रयोदश सर्ग में लंका में आकर हनुमान अपने प्रभु के दुख तथा सीता माता के प्रति संवेदित होकर चिन्तित होते हैं। धैर्य और साहस के साथ वे निश्चित करते हैं कि रावण को विनाश करना ही होगा। सीता अन्वेषण हेतु हनुमान जी रावण राज्य के अन्तर्गत अशोकवन में आने पर अशोकवाटीका में एक दु:खकातर रमणी को देखकर समझते हैं ये सीता माता हैं। राम सीता को दु:खी अवस्था में देखकर हनुमान जी पीड़ित होकर विलाप करते हैं।

सप्तदश सर्ग में सीता माता को देखकर हनुमान जी रो पड़ते हैं त्रिंस सर्ग में देखकर माता को आश्वस्त तथा विश्वस्त उत्पादन के लिये प्रभु का गुणगान करने लगे –

"श्रीराम जय राम जय जय राम, श्रीराम जय राम जय जय राम, राम कहानी शुनों रे राम कहानी....." –

एसव शुनके सीता माता विलाप करते हैं – "हा राम, हा लक्ष्मण" ।

चतुस्त्रिंश सर्ग में रामजी के गुणगान से सीता माता जब विश्वस्त हुई तब पवनदूत हनुमान राम और लक्ष्मण की कुशलवार्ता माता के पास ले आते हैं और प्रभुके गुण में बोलते हैं, मेरा प्रभु धनपति कुबेर की तरह समृद्धिवान, यशस्वी, विष्णु की तरह वीर्यवान, सुर गुरू वृहस्पति की तरह सत्यनिष्ठ तथा मृदुभाषी, मूर्तिमान कन्दर्प की तरह उनके रूप हैं।

पञ्चत्रिंश सर्ग में प्रभु के वारे में गुणकीर्तन सुनने के बाद भी राम और लक्ष्मण के वारे में सीता माता फिर भी शंकित होकर जानना चाहती हैं। तब हनुमान जी बोले- राम पद्मपलाशलोचन, पूर्णचन्द्र के सदृश मुखमणडल, सूर्य के सदृश तेज, पृथ्वी सदृश सविनयी, बुद्धि में वृहस्पति और यश में इन्द्र सदृश, प्राणियों के रक्षक तथा स्वजन पालक दीप्तिमान, व्रहमचारी, उपकारी, सत् राजनीतिज्ञ, विप्रसेवा विषये अनुरक्त, ज्ञानी, विनीत, यजुर्वेद, धनुर्वेद और वेदांग में पूर्ण अधिकारी, स्कन्ध स्थूल बाहु दीर्घ ग्रीवा मनोहर, कन्ठास्थि प्रच्छन्न, चक्षु ताम्रवर्ण, कन्ठस्वर दुन्दुभि सदृश, श्यामवर्ण, मणिबद्ध, सत्यवादी, देशकालज्ञ तथा प्रियवादी। इसके बाद हनुमान स्वयं अपना परिचय देते हुए भीषनाकार रूप धारण करते हैं और नामांकित एक अंगुठी माता को दिखाते हैं। फिर एकवार माता को आश्वस्त करके बोले प्रभु जी आपकी तरह दु:खी हैं तथा आपको स्मरण करते हैं। प्रभु अवश्य आपको यहां से ले जायेंगे।

राम भक्त हनुमान और उनके तीन भक्तिपूर्ण प्रसङ्ग:-

(प्रसङ्ग-१)

एक बार माता सीता ने हनुमान जी से प्रसन्न होकर उन्हें रत्नों का एक हार दिया और सेवकों को भी उन्होंने भेट स्वरूप मोतियों से जड़े रत्न दिये जब हनुमान जी ने हार को अपने हाथ लिया तब उन्होंने प्रत्येक हीरे को माला से अलग कर दिया और उन्हें चबा-चबाकर जमीन पर फेंकने लगे। यह देख माता सीता को क्रोध आ गया और वे बोलीं- "अरे हनुमान ! ये आप क्या कर रहे हैं, अपने इतना मूल्यवान हार नींचे खसोटकर नष्ट कर दिया " । यह सुनकर अश्रुपूरित नेत्रों से हनुमान जी बोले - " माते! मैं तो केवल इन रत्नों को खोलकर यह देखना चाहता था कि इनमें मेरे आराध्य प्रभु श्रीराम और माता सीता बसते हैं अथवा नहीं। आप दोनों के बिना इन पत्थरों का मेरे लिए क्या मोल?

प्रभु श्रीराम तो मेरे हृदय में बसते हैं, इतना कहकर उन्होंने अपनी हृदय चीर डाला और माता सीता सहित सभी सेवकों को हनुमान जी के हृदय में श्रीराम जी के दर्शन हुए।

(प्रसङ्ग -२)

एक बार माता सीता अपनी मांग में सिंदूर लगा रही थीं, उनके पास में ही बैठ हनुमान जी उन्हें सिंदूर लगाते हुए देख रहे थे, उन्होंने सीता माता से पूछा-"माते आपको हर रोज हम इसी तरह सिंदूर लगते हुए देखते हैं, मांग में सिंदूर लगाने का क्या आशय हैं " ?

सीता माता ने कहा-" हनुमान मैं अपने पति श्रीराम के नाम का सिंदूर अपनी मांग में लगाती हूं ताकि उनकी उम्र बहुत लंबी हो "। हनुमान जी सोच में पड़ गये और उन्होंने फौरन ही एक थाल सिंदूर लिया और अपने शरीर पर लगा दिया। उनका पूरा शरीर लाल सिंदूर के रंग में रंग चुका था। सीता माता के पूछने पर वे बोले- " माते मैंने भी श्रीराम के नाम का सिंदूर पूरे शरीर भर में लगाया हैं ताकि उनकी असीम कृपा मुझ पर हमेशा बनी रहे और मेरे प्रभु, मेरे आराध्य की उम्र इतनी लंबी हो कि मेरा सम्पूर्ण जीवन उनकी सेवा में ही बीते "

(प्रसङ्ग -३)

जब हनुमान समुद्र पार करके सीता माता को खोजने के लिये लंका पहुंचे तब वे रावण के छोटे भाई विभीषण के पास गए। विभीषण ने हनुमान जी से एक छोटा सा प्रश्न किया कि" प्रिय हनुमान, क्या श्रीराम मेरे ऊपर कृपादृष्टि बनायेंगे " ? रावण मेरे भ्राता हैं क्या यह जानते हुए भी वो इस संसार से मुझे मुक्ति दिलायेंगे?

यह सुनते ही हनुमान जी बोल पड़े – विभीषण महाराज आप संशय क्यों कर रहे हैं, जब मुझ जैसा वानरकुल में पैदा हुए एक वानर को उन्होंने शरण दे दी, अपना दास स्वीकार कर लिया, तब भला वे आपकों क्यों नहीं अपनाऐंगे।

आप तो एक इंसान हैं, और आपके अंदर इतनी अच्छाइयां छिपी हैं, वे जरुर आपकी सहयता करेंगे।

इस प्रकार हनुमान जी ने ही अपनी भक्ति से विभीषण के मन में अटूट विश्वास पैदा कर दिया जिस कारण ही विभीषण, श्रीराम का साथ देने को पूर्ण रुप से तैयार हो गए।

ऐसा माना जाता हैं कि हनुमान जी भगवान श्री शिव शंकर के रुद्र अवतार हैं। वे राम के परमभक्त और उनकी भक्ति में रहने के लिए धरती पर अवतरित हुए हैं। इन्हें संकटमोचन के नाम से भी पुकारा जाता हैं क्योंकि ये अपने परम भक्तों को हर संकट से उबार लेते हैं। रामायण महाकाव्य में महर्षि वाल्मीकि ने रामचन्द्र और हनुमान के कार्यों को बहुत ही सुन्दर तरीके से पिरोया हैं। रामायण के पाठ से यह पता चलता है कि हनुमान अपनी नि:स्वार्थ भक्ति से राम के मन-मन्दिर में बसे हुए हैं। राम जी के लिये उन्होंने असंभव कार्य भी सिद्ध कर दिया है। ऐसे रामभक्त को हम कोटि – कोटि प्रणाम करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थसूची

1. रामचरित मानस – गोस्वमी तुलसीदास।
2. वाल्मीकि रामायण – सम्पादना ज्योतिभूषण चाकी – देव साहित्य कुटिर प्राइभेट लिमिटेड ।
3. विष्णुपुराण
4. नारदपुराण